RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

आधुनिक संदर्भ में संत रविदास की प्रासंगिकताः एक अध्ययन

डॉ. विनीता शर्मा

हाईलैण्ड अपार्टमेन्ट, सैक्टर–12, द्वारका,नई दिल्ली।

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
प्रासंगिकता, सांप्रदायिकता, जातिवाद, व्यवसायीकरण।

ABSTRACT

साहित्य चाहे किसी भी काल का हो, यदि वह वास्तविक और सच्चा साहित्य है, दूसरों के सुख–दुःख से जुड़ा है, तो सदा ही प्रासंगिक रहेगा, पठनीय रहेगा। संत रविदास जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को संदेश देने का कार्य किया, समाज को नई दिशा देने का प्रयास किया। इसी कारण संत रविदास आज भी प्रासंगिक है।

प्रस्तावनाः–

आज धर्म, समाज, संप्रदाय के नाम से विखंडित मानव ने, विश्व को विनाश की कगार पर ला खड़ा कर दिया है। धर्म के नाम फल–फूल रहे अधर्म ने विश्व मानवता को कलंकित कर दिया है। मानव अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर इन्सानियत, भाईचारा और मानवता को भूलता जा रहा है। आज आतंकवाद, अलगाववाद, सांप्रदायिकता, चरित्रहीन राजनीति, विकृत अपसंस्कृति के कारण देश की एकता और अखंडता को खतरा उत्पन्न हो गया है। इन चुनौतियों ने हमें बाध्य कर दिया है कि हम चौदहवी शताब्दि में प्रदत्त सतगुरु संत रविदास के चिंतन से रूबरू हों, उनका चिंतन दर्शन किसी भी व्यक्ति को निजीरूप में और बेहतर नागरिक के रूप में विकसित करने में निरन्तर ऊर्जा प्रदान करता है। उनका चिंतन सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों, स्वार्थों व संकीर्णताओं से मुक्त है, जिसकी वर्तमान सदी में बेहद आवश्यकता है।

संत रविदास का हिन्दी निर्गुण काव्य धारा में विशेष योगदान रहा है। क्रांतिकारी, समाजसुधारक, दार्शनिक, भक्त और कवि जैसी अनेक विशेषताओं से विभूषित संत रविदास कबीर के बाद सबसे लोकप्रिय संत थे। सुविधावंचित और उपेक्षित वर्ण में जन्में रैदास जी ने 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' का उद्घोष देकर आंतरिक पवित्रता, निश्छलता और निर्मलता का मर्मस्पर्शी मंत्र देकर दीन–दलितों के अधिकारों को दिलवाने के लिए आजीवन संघर्ष करते रहे, वे आज भी यथावत् है जो कि वर्तमान दलित संदर्भ में और भी प्रासंगिक हो उठे हैं।

मध्यकालीन भारत अंधविश्वासों के घनघोर अंधेरे में साँस ले रहा था। कुछ बेबुनियाद रूढ़ियों ने उसमें और सड़न पैदा कर दी थी। संत रैदास ने तत्कालीन रूढ़ियों के प्रति विद्रोह किया, इसलिए उन्हें सामाजिक क्रान्ति का अग्रदूत कहने में अत्युक्ति नहीं है।

साहित्य की समीक्षाः

आज के युवा में संयम नहीं है। वो तुरंत अपना आपा खो बैठता है और उसे अप्रिय स्थितियों का सामना करना पड़ता है। संत रविदास ने संयम, शील व संतोष का बखान अपनी वाणी में किया। उनके अनुसार संयमहीन मानव व्यर्थ में भ्रमित रहता है। जो युवा अपने अंदर संयम, शील व संतोष को धारण करता है, वो अमृत का भागी रहता है –

''जो बस राखे इन्द्रियां, सुखदुख समझि समान।
सोउ अमरित पद पाइगे, कहैं रविदास बखान।''1

जातिवाद मनुष्यता का दुश्मन है। आधुनिककाल में महात्मा ज्योतिबा फुले, डॉ. बाब साहेब अम्बेडकर ने जिस जातिवाद को समानता, बंधुता, मानवता के खिलाफ बताकर 'समाज परिवर्तन की बात की आगे बढ़ाया, उसी तरह चौदहवीं शताब्दि में गुरू रविदास जी ने जातिवाद को समाज में एक भयंकर रोग की संज्ञा दी है। उनके अनुसार जातिवाद के कारण मानव–मानव में सच्चा बंधुभाव व समानता पैदा नहीं हो सकती –

''जात पात के फेर मेंहि, उरझि रहइ सब लोग।
मनवता कूं खात हई, रविदास जाति का रोग।।2

सतगुरू रविदास जी का मानना था कि कोई व्यक्ति जन्म से नीच नहीं होता, बल्कि अपने कर्मों द्वारा नीच होता है। वे एक ही जाति को सर्वोपरि मानते थे, वह हैं मानव जाति। उनके अनुसार सभी मनुष्य एक ही परमात्मा की संतान है। वे कहते हैं –

''जन्म जात मत पूछिए, का जात और पाँत।
रैदास पूत सम प्रभू के कोई नहिं जात कुजात।।3

आज के आधुनिक युग में भी ऊँच–नीच व जाति व्यवस्था दिखाई देती है। इसी कारण मानव–मानव के भीतर मतभेद बढ़ रहा है। संत रविदास जी का काव्य जाति–पाति व ऊँच–नीच के अभिशाप से भारत को मुक्ति दिलाने में सहायक हो सकता है।

संत रविदास जी का जन्म ऐसे समय में हुआ था, जब हिन्दु मुसलमानों में धार्मिक विद्वेष की भावना फैली हुई थी। धर्म का रूप केवल बाहरी आडम्बरों पर ही निर्भर था। पंडित और मुल्लाओं की प्रधानता एवं उनकी संकुचित विचारधारा के कारण बाह्य आड़म्बरों की मात्रा बढ़ गई थी। संत रविदासजी ने इन बाह्य आड़म्बरों को राष्ट्र विकास में बाधक मानते हुए

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इनका घोर विरोध किया। उन्होंने तीर्थ स्थल, वेद–पाठ, छुआ–छूत, रोजा नमाज, हिन्दु–मुसलमान, मन्दिर–मस्जिद, इन सबका विरोध किया। उनके अनुसार ईश्वर को बाहर खोजना व्यर्थ है। अगर हमें परमात्मा को पाना हैं तो अपने हृदय रूपी मन्दिर में खोजना पड़ेगा, तभी उनकी दिव्य अनुभूति होगी।

''बन खोजा पी ना मिलै बन मै प्रीतम नांहि,
रविदास पी हम बसै, रहियों मानव मांहि।''4

शिक्षा के बढ़ते व्यवसायीकरण ने गुरू–शिष्य परम्परा को लील किया है। युवाओं में दिनों–दिन अपने गुरू के प्रति आदर की कमी आम बात है। रविदास जी सतगुरू के महत्व को अपनी वाणी द्वारा व्यक्त किया, जो युवाओं के लिए अनुकरणीय व प्रेरणादायक है। रैदास जी ने ईश्वर साक्षात्कार व अपने भीतर के तम को बुझाने के लिए गुरू की अनिवार्यता पर बल दिया है –

''गुरू ग्यान दीपक दिया बाती दई जलाय,
रैदास हरि भगति कारने जन्म मरन विलमाय।''5

संत रविदास जी के समय में साम्प्रदायिकता, विषमता व्याप्त थी। एक ओर हिन्दुओं में पारस्परिक ऊँच–नीच, छुआ–छूत की भावना प्रकट हो उठी थी तो दूसरी ओर मुस्लिम शासक वर्ग हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए कटिबद्ध थे। रविदास जी ने हिन्दु–मुस्लिम के बीच की खाई को मिटाने का प्रयत्न किया। उन्होंने पुराण और कुराण अथवा राम और रहीम संबंधी चिन्तन धाराओं के मूल तत्वों को शोध–शोध कर सामान्य व्यक्ति के सम्मुख प्रस्तुत किया –

''मुसलमान सों दोसती हिन्दुअन सों कर प्रीत।
रविदास जोति सभ राम की सभ है अपने मीत।''6

इस प्रकार संत रविदास जी ने वैचारिक गरिमा, सूक्ष्मदर्शिता, पारस्परिक सामाजिक विरोधों को समाप्त कर अपनी वाणी द्वारा साम्प्रदायिक कट्टरता के विषैले तत्वों का विरोध कर समाज उन्नति एवम् राष्ट्र विकास के लिए समता, स्वतन्त्रता एवं बंधुत्व की स्थापना की जो आज भी प्रासंगिक लगता है। आज जब साम्प्रदायिकता के कारण देश के विकास में रूकावट आ रही है, तब रविदास जी की वाणी से हम उसे दूर करने का प्रयत्न कर सकते हैं।

संत रविदास आदर्श राज्य की कल्पना करते हैं, जो आज के समाज के लिए भी प्रेरक हो सकती है। उन्होंने भयमुक्त, दुःखमुक्त तथा समतामूलक राज्य निर्माण की घोषणा की थी, जिसमें रहने वाला पूरा समाज सर्व सुखाय, सर्वहिताय में रहें।

''वे सभी भेदभावों को भूलाकर 'बेगमपुरा' बसाना चाहते थे, जहाँ पर किसी को कोई कष्ट न हो और न चिंता, किसी को टैक्स न देना पड़े। सब निर्भीक होकर एक दूसरे की सहायता कर सके।''7

इस प्रकार जिस मानवतावादी लोकतांत्रिक समाजवाद की संकल्पना संत रविदास जी ने छः सौ वर्ष पूर्व की थी, वो आज भी प्रासंगिक लगती है। जैसे –

''बेगमपुरा सहर को नाउं, दुखु अदोहु नहीं विहि ठांउ।
नं तसवीस खिराजु न मालु, खरफु न खता न तरसु जवालु।।
अब मोहि खूब वतन गह पाई, ऊहां खौरि सदा मेरे भाई।।8

इस प्रकार संत रविदास जी ने तत्कालीन विषमता के विरूद्ध संघर्ष कर मानवता के धरातल पर समतावादी, समाजवादी एक ऐसे रामराज्य की कल्पना की थी, जहाँ पर कोई छोटा–बड़ा नहीं होगा। सभी को उसकी आवश्यकता के अनुसार अन्न, धन, शिक्षा प्राप्त होगी। यह कल्पना आज से छःसौ वर्ष पूर्व की थी। जैसे–

''ऐसा चाहौं राज मैं जहाँ मिलै सबन कौ अन्न।
छोटा–बड़ा सभ सम बसै, रविदास रहैं प्रसन्न।''9

निष्कर्षः

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संत रैदास का जीवन और काव्य उदात्त मानवता के लिए आवश्यक सदाचारों के शाश्वत सैद्धान्तिक मूल्यों का अक्षय भंडार है। जिसमें से प्रत्येक वर्ग और स्थिति तथा मानसिक स्तर पर व्यक्ति अपने लिए सुन्दर–सुन्दर मोतियों का चुनाव सुगमता से कर सकता है। आज भाग्य, भगवान, तीर्थ, स्नान और न जाने कितने प्रकार के तथाकथित क्रियाकलाप मनुष्य और मनुष्यता के दुश्मन बनकर हमारे सामने आ रहे हैं। ऐसे धार्मिक पाखंड़ों से मुक्ति के लिए गुरूजी, मन की शुद्धता व श्रम को महत्व देते हैं। ऐसा नहीं है कि गुरू रविदास जी का चिंतन दर्शन सिर्फ किसी जाति, व्यक्ति या बेगमपुरा तक ही था। उनके चिंतन में सम्पूर्ण विश्व की चिंता साफ दिखती है। अक्खड़ता व आक्रामकता के बनिस्पत संवाद धर्मिता एवं मानवीय प्रेम की वकालत करने वाले गुरु रविदास आज जाति, धर्म, देश की सीमाओं से परे अपने चिंतन–दर्शन के कारण पूरे विश्व में समादृत है। रविदास जी का अनुभव व चिन्तन एक ऐसा दीपक है, जो समाज में फैले भ्रष्टाचार, जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद, हिंसावाद व अनैतिकता के घने अंधकार को नैतिकता में बदल सकती है। उनकी वाणी अमरता का उद्घोष करती है। संत रविदास की सामाजिक चेतना बहुआयामी है वे किसी एक वर्ग की बात नहीं करते। इन सम्पूर्ण तथ्यों पर विचार करने के उपरान्त हम कह सकते हैं कि संत रैदासजी के काव्य का वैचारिक आधार बहुत दृढ़ तथा उसकी भावात्मक पृष्ठभूमि बहुत ही विस्तृत तथा सामाजिक महत्व की है, जिसकी प्रासंगिकता सम–सामयिक संदर्भों में भी असंदिग्ध है।

संदर्भ सूची

1. युगप्रवर्तक संत गुरू रविदास – संपादक आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद – पृ.संं 82
2. जगतगुरु रविदास अमृतवाणी (सटीक) एवं संक्षिप्त जीवन संपादक निशान साहिब – पृ.सं. 268
3. जगतगुरु रविदास अमृतवाणी (सटीक) एवं संक्षिप्त जीवन संपादक निशान साहिब – पृ.सं. 268

4. संत रविदास, इन्द्रराज सिंह – पृ.सं. 32
5. गुरु रविदास, काशीनाथ उपाध्याय, राधास्वामी सत्संग व्यास, अमृतसर
6. संत कवि रैदास – मूल्यांकन और प्रदेय – डॉ. एन. सिंह पद 181 पृ. 35
7. पंजाब सौरभ (गुरू रविदास विशेषांक) – रजनीश कुमार, पृ. 84
8. संत गुरु रविदास वाणी – डॉ. बी.पी. शर्मा, पद 35, पृ. 84
9. पावन अमृतवाणी – श्री गुरु रविदास जी – निशान साहिब पृ. 96

RRIJM 2015, All Rights Reserved